आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका (कोविड-19 के संदर्भ मे)

शशि रानी
डॉ भीमराव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
ssranidu@gmail.com

शोध सार

आपदा के समय में मीडिया की भूमिका इस बात से निर्धारित होती है कि उसने आपदा के दौरान अपने दायित्वों का निर्वाह किस तरीके से किया है। द्वितीय प्रेस आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि प्रेस का प्राथमिक कार्य देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं की व्यापक और वस्तुनिष्ठ सूचना देकर समाज निर्माण एवं जनमत को दिशा निर्देश देना है। मीडिया की भूमिका आपदा की स्थिति में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। दिसंबर 2019 में कोविड-19 पूरे विश्व में विनाशकारी स्थिति लेकर आया। चीन के वुहान शहर से महामारी का प्रकोप शुरू हुआ और थोड़े ही समय में ना केवल चीन में बल्कि पूरे विश्व में फैल गया महामारी रूपी इस आपदा से निपटने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्रत्येक राष्ट्र को लोक डाउन के नियमों और विनियमों का पालन करने की सलाह दी थी। भारत सरकार ने भी करोना से बचाव के लिए लगभग 6-7 महीने तक लोक डाउन लागू किया। समय मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका नागरिकों के साथ, आरके बीच संचार बनाए रखने में थी। साथी अपने परिवार और परिजनों ,के साथ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच संबंध बनाए रखने में। अधिकांश मीडिया ने कोरोना वायरस आपदा की गंभीर स्थिति में जीवन को आसान बनाने का काम किया।

बीज शब्द *- कोविड-19, मास मीडिया, सोशल मीडिया, डिजिटल मीडिया, आपदा प्रबंधन*

प्रस्तावना

मास मीडिया आजकल हर किसी के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका उपयोग लोगों के लिए दुनिया भर में समाचार आसानी से जानने, विज्ञापन के लिए, व्यक्तिगत ब्रांडिंग को बढ़ावा देने, अन्य देशों के कई सांस्कृतिक पहलुओं को जानने आदि के लिए एक बहुत ही उपयोगी उपकरण के रूप में किया जा रहा है। टेलीविजन, रेडियो, विज्ञापन, फिल्में, इंटरनेट, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि को मास मीडिया के रूप में संदर्भित किया जाता है। आज की संस्कृति में, मास मीडिया एक शक्तिशाली शक्ति है (Roy, et al 2020)।, मास मीडिया सामाजिक संबंधों को बनाए रखते हुए सभी सार्वजनिक स्वास्थ्य संदेशों, संपूर्ण स्वास्थ्य शिक्षा मानकों और प्रभावी सामाजिक दूर करने के तरीकों के लिए एक एकीकृत मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें स्वास्थ्य देखभाल तक समान पहुंच प्रदान करने, पूर्वाग्रह को खत्म करने और सामाजिक कलंक को कम करने की क्षमता है। कोविड-19 और भविष्य के प्रकोपों का मुकाबला करने में मीडिया और सार्वजनिक स्वास्थ्य संचार की भूमिका को समझने और तलाशने का महत्व महत्वपूर्ण है। यूट्यूब, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया का विशेष रूप से विनाशकारी कॉविड-19 महामारी के समय सूचना के प्रसार के लिए मुखबिर के रूप में उपयोग किया गया।

साहित्य अवलोकन

समाचारों का महत्व हमेशा मौजूद रहता है लेकिन कोविड-19 के समय समाचारों का महत्व अपने चरम पर पहुंच चुका था। प्रिंट मीडिया और समाचार पत्र समाचार में अपनी सटीकता के लिए लोकप्रिय हैं (Cellini., et al 2020)। आजकल खुद को कोरोना वायरस से सुरक्षित रखने का मुख्य हथियार है, इसे वितरित करना प्रिंट मी शटडाउन डिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अधिक प्रसिद्ध हो रहा है लेकिन फिर भी, अखबार सभी को किसी भी घटना का सही और विस्तृत विवरण देता है। कोविड -19 के समय, सामाजिक दूरी के लिए एक चुनौती रही है। इसके अलावा आर्थिक रूप से भी प्रिंट मीडिया को विज्ञापन से होने वाली आय की कमी के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अन्य पहलुओं में, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने लॉकडाउन या के कारण इसके महत्व को और अधिक आसानी से बढ़ा दिया है। लोग किसी भी समय टीवी और मोबाइल पर खबरें देखने के शौकीन हो गए हैं। डब्ल्यूएचओ की बैठकें, पीएम के फैसले आदि लोगों को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की मदद से अपडेट किया गया है। इसके बावजूद सोशल मीडिया हर किशोर के साथ-साथ मध्यम आयु वर्ग के लोगों के लिए भी सबसे अच्छा दोस्त बन गया है। उन्हें अपने दोस्तों और परिवारों से जोड़ा जा सकता है क्योंकि तालाबंदी के कारण सभी अपने घरों में फंस गए थे। इसलिए इसने हर व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में बहुत मदद की है।

भारत में आपदा प्रबंधन

भारत, शुरू से ही इस देश की असाधारण भू-जलवायु परिस्थितियों के साथ-साथ जनसंख्या विस्फोट के कारण प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ मानव निर्मित आपदाओं की चपेट में रहा है। राष्ट्रीय मेट्रोलॉजिकल विभाग के आंकड़ों के अनुसार, लगभग 60% भूभाग को भूकंप संभावित क्षेत्रों के रूप में माना गया है, जबकि लगभग 40 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रों को बाढ़-प्रधान क्षेत्र माना जाता है। विशेष रूप से बंगाल की खाड़ी के तटीय क्षेत्र को चक्रवात प्रभावित क्षेत्र घोषित किया गया है और 58 प्रतिशत भूमि को सूखे की

स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। 1999 में ओडिशा का सुपर साइक्लोन, 2001 में गुजरात का भीषण भुज भूकंप और उत्तराखंड की विनाशकारी बाढ़, और इसी तरह भारत में हुई महान आपदाओं के कुछ उदाहरण हैं (गुप्ता., और अन्य 2001)। इसलिए आपदा प्रबंधन टीम की प्रभावित क्षेत्रों को नियंत्रित करने वाले देशों के ढांचे को विनियमित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, खासकर वंचित और गरीब लोगों के लिए। आपदाओं से कुशलतापूर्वक निपटने के लिए आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005, जनवरी 2006 में लागू हुआ। इस अधिनियम का मूल उद्देश्य सरकार की रणनीति और क्षमता का निर्माण करने के लिए आपदा के महत्वपूर्ण समय का प्रबंधन करना है (Nomani., et al 2020)। इसका उपयोग उन स्थानों पर किया जाता है जहाँ कोई प्राकृतिक आपदा आती है या कोई मानव निर्मित आपदा होती है। नोडल एजेंसी इस अधिनियम की प्रमुख विशेषता है। इस अधिनियम में कुल 11 अध्याय हैं जिनमें 79 धाराएं हैं जहां आपदा के समय पीड़ितों को सुरक्षा देने के लिए कई प्रावधानों का उल्लेख और वर्णन किया गया है (सरकार., और अन्य 2006) इस अधिनियम की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता धारा 44 और 45 है जो अंततः राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल प्रदान करती है । जिसकी किसी भी कीमत पर लोगों को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस अधिनियम और एनडीआरएफ टीम के लागू होने के बाद सरकार के लिए किसी भी आपदा के समय गंभीर स्थिति का प्रबंधन करना आसान है।

आपदा प्रबंधन के क्षेत्र

ऐसे कई क्षेत्र हैं जिन पर आपदा प्रबंधन के समय विचार करना आवश्यक है। बहुत ही बुनियादी और महत्वपूर्ण आपदा प्रबंधन दृष्टिकोण को चार भागों में बांटा गया है-

क) आपदा के समय प्रतिक्रिया

।इसके अंतर्गत आपदा से प्रभावित लोगों की तलाश एवं बचाव कार्य करना,ट्रिपल-एक्शन पॉलिसी जो खतरे में पड़े लोगों को बचाने के लिए , उन्हें आश्रय में ले जाना और भोजन और पीने के पानी की व्यवस्था करना, उचित चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था करना,उन लोगों को आश्रय देना जिनके पास कोई निजी घर नहीं है या जो आपदा के खतरनाक स्थान पर हैं।

ख) स्थिति खराब होने के बाद पुनर्स्थापन

इसमें प्रभावित स्थानों पर आपदा होने के बाद केंद्र या राज्य सरकार द्वारा किए गए कार्य जैसे आपदा आदि के कारण क्षतिग्रस्त हुए घरों और भवनों को तैयार करना, प्रभावित व्यक्तियों को आश्रय देना आते हैं।
नहीं प्राकृतिक आपदाएं भी अपने स्वार्थ और लोभ के कारण मानव निर्मित कर्मों का कारण बन रही हैं। इसलिए सरकार ने पर्यावरण और लोगों की सुरक्षा के संबंध में क्रमशः कई

ग) शमन की प्रक्रिया या रोकथाम का कार्य

इस प्रक्रिया में वह कार्रवाई शामिल है जो अंततः आपदाओं की संख्या और आपदाओं के कारण होने वाली खतरनाक स्थिति की संभावना को कम करती है । इसके लिए सरकार ने कई नियम और कानून लागू किए हैं।

घ) आपदा अवधि के दौरान तैयारी प्रक्रिया

, यह आपदा प्रबंधन का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहाँ आपदा के समय अचानक निर्णय लेने पड़ते हैं। इसका मुख्य मकसद उस खास समय पर आपातकालीन स्तर की संख्या और स्तर को कम से कम करना है (Negi., et al 2020)। स्थिति को नियंत्रित करने में सरकार और गैर सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है

शोध उद्देश्य

1. भारत में आपदा प्रबंधन का अध्ययन करना।
2. कोविड-19 महामारी के प्रकोप के दौरान भारत में विनाशकारी स्थिति के बारे में जानना।
3. लॉकडाउन के समय मीडिया का महत्व जानना।
4. कोविड-19 आपदा के दौरान मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध विधि

शोध पद्धति या डिजाइन का उपयोग शोध में उस रूपरेखा को प्राप्त करने के लिए किया जाता है जहां से डेटा एकत्र किया गया है और इसे किस विधि से मापा और विश्लेषण किया गया है। शोध पद्धति का मूल महत्व शोध प्रक्रिया की व्याख्या करना है जो शोध पत्र में मामलों को प्रस्तुत करता है। इस शोध पत्र में आँकड़ों के संग्रहण के लिए गुणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है और यह वर्णनात्मक प्रकृति की है।

व्याख्या और विश्लेषण

निस्संदेह, भारत अधिक जनसंख्या के कारण कोरोनावायरस से सबसे अधिक प्रभावित देशों में से एक रहा है इसलिए भारत को जोखिम क्षेत्र माना जाता है (Bagcchi., et al 2021)। भारत सरकार ने नागरिकों को घातक वायरस से बचाने के लिए लोक डाउन लागू किया। स्थानीय परिवहन सहित सभी परिवहन सुविधाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, इसके अलावा दुकानें और मॉल, सिनेमा हॉल, शैक्षणिक संस्थान तथाकथित स्कूल और कॉलेज, और उन जगहों पर जहां सार्वजनिक सभा हो सकती है, अनिश्चित समय के लिए बंद की घोषणा कर दी।
उस आपदा के क्षण में, सभी को अद्यतन समाचार प्रदान करने में मीडिया की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सामाजिक दृष्टि से आर्थिक गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार ने उस समय ढांचागत विकास और क्षमता निर्माण परियोजनाओं को भी लिया था (Goel., et al 2020)। मास मीडिया जिसमें टीवी, रेडियो और सोशल मीडिया यानी फेसबुक ट्विटर

और इंस्टाग्राम भी शामिल हैं, की भारत सरकार को समर्थन देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सोशल मीडिया हैंडल के सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार यह गणना की गई है कि भारत में लॉकडाउन के लागू होने के कारण सोशल मीडिया के उपयोग में काफी वृद्धि हुई है। वैश्विक आर्थिक मानकों द्वारा यह भी देखा गया है कि लॉकडाउन के दौरान मास मीडिया की टीआरपी की संख्या पहले की तुलना में 60% से अधिक बढ़ गई है (जेना., और अन्य 2020)। लोगों ने खबरों के साथ-साथ सीरियल और सिनेमा देखना भी पसंद किया है। रामायण और महाभारत जैसे कई पवित्र धारावाहिकों को फिर से टीवी पर प्रसारित किया गया है जिसने अंततः युवा और पुरानी पीढ़ी दोनों को आकर्षित किया कोरोना है।

प्रिंट मीडिया पर वितरण प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं के कारण लॉकडाउन की स्थिति का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है क्योंकि करो ना वायरस के हाथ से हाथ छूने या किसी भी वस्तु से फैलने की संभावना होती है इसलिए लोग अखबार लेने से डर रहे थे। इंडियन एक्सप्रेस के आंकड़ों के अनुसार यह देखा गया है कि अखबार के पाठकों की संख्या में लगभग 22% की गिरावट आई है (बनर्जी., और अन्य 2021)। हालांकि यह प्रिंट मीडिया के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थिति है जो इसे आर्थिक रूप से प्रभावित करती है।

कोविड-19 आपदा में भारत एवं अन्य देशों में जीवन जीने की स्थितियां बदतर हो गई ऐसी संवेदनशील परिस्थिति में प्रिंट मीडिया ने तथ्यों को पूरी सत्यता से पाठकों तक पहुंचाया। कोरोना से बचाव के उपाय, घर में खुद को स्वस्थ रखने की जानकारी, मुफ्त राशन दवाइयों और ऑक्सीजन की जानकारी, नगरीय निकायों द्वारा राहत सामग्री पहुंचने की जानकारी, हेल्पलाइन नंबर, अधिकारियों के नंबर, अस्पतालों के नंबर जैसी सभी जानकारियां दीं। केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा जनता की सुरक्षा हेतु बनाए गए ऐप और पोर्टल जैसे ट्रैकिंग, सर्चिंग व सेल्फ एसेसमेंट एप, एसेंशियल गुड्स एप, प्रवासी एप, ई लर्निंग , ईपास, आरोग्य सेतु एप कोरोना वैक्सीन आदि से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी । करोना वॉरियर्स सुरक्षाकर्मियों, चिकित्सकों एवं स्टाफ, प्रशासनिक अधिकारी, स्वयंसेवी संगठनों के कार्यों की सराहना की। कोरोना के कहर से जब मृतकों की संख्या लगातार बढ़ रही थी ऐसे समय में लोगों के मानस को सकारात्मक बनाए रखने के लिए कोरोना को हराकर जिंदगी की जंग जीतने वाले लोगों की खबरों को प्राथमिकता से छापकर सकारात्मक और आशावादी माहौल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। सरकारी अव्यवस्थाओं, स्वास्थ्य सुधार संबंधी कर्मियों, पार्टियों की राजनीति जैसे मामलों को समाचार के रूप में प्रस्तुत किया। साथ ही दवाइयों और ऑक्सीजन की काला बाजारी, प्रवासी मजदूरों की परेशानी को दिखाकर प्रशासन को जागरुक कर सामान्य स्थिति स्थापित करने में सरकार का सहयोग किया।

रेडियो, टेलीविज़न पर महामारी के दौरान सुबह और शाम को विशेष बुलेटिन जारी किए गए। लोगों को जागरूक करने के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञों से विशेष परिचर्चा और संवाद सत्र रखे गए। प्रेस सूचना ब्यूरो ने सोशल मीडिया की फेक न्यूज़ पर रिपोर्ट जारी की इससे लोगों को फेक न्यूज़ की सच्चाई का पता चला। ग्रामीण इलाकों तक रेडियो की आसान पहुंच से आकाशवाणी पर लोगों को सही जानकारी मिली। रेडियो मिर्ची, एफएम चैनलों और सामुदायिक रेडियो ने प्रभावशाली तरीके से लोगों को शिक्षित किया।

टेलीविजन चैनलों ने महामारी के कारणों और प्रभावों के बारे में कॉन्फ्रेंस, वर्कशॉप आयोजित की और अच्छी तरह हाथ धोने, मास्क पहनने और शारीरिक दूरी बनाए रखने जैसे विषयों को दिखाया। इन परिचर्चाओं और फील्ड कवरेज ने करोना वॉरियर्स का आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद की। दूरदर्शन ने सही और सटीक खबर दी साथ ही रामायण और महाभारत जैसे धारावाहिकों से नैतिक मूल्यों को मजबूत किया। जनहित के विज्ञापनों ने कोविड-19 से उत्पन्न समस्याओं से बचने में मदद की।

फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब, टिक टॉक आदि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर करुणा के इलाज के संबंध में एक संदेश तेजी से फैलाए गए ऐसी भी फेक न्यूज़ सामने आई जिससे सांप्रदायिक तनाव और हिंसात्मक घटनाएं घटित हुई । हालांकि सोशल मीडिया दोस्तों और परिजनों के साथ सामाजिक संबंध बनाने, राजनीतिक और नागरिक सहयोग करने, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने, स्थापित करने, रचनात्मक गतिविधियों को सामने लाने, सीखने- सिखाने मैं महत्वपूर्ण योगदान दिया। लॉकडाउन के दौरान स्कूल और कॉलेज दोनों के छात्रों की शिक्षा प्रणाली जब डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निर्भर थी, तब छात्रों के भविष्य को आकार देने में फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया पेजों की बहुत जबरदस्त भूमिका थी (Garg., et al 2020)। । महिलाओं के खिलाफ मामलों पर आधारित सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार, सरकार को पता चला था कि उस समय महिलाओं के खिलाफ अपराध और हिंसा बहुत बढ़ गई थी, इसलिए डिजिटल मीडिया ने हेल्पलाइन नंबर देकर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जो महिलाएं अपनी पीड़ा के बारे में शिकायत करना चाहती हैं (Takalani., et al 2020)।

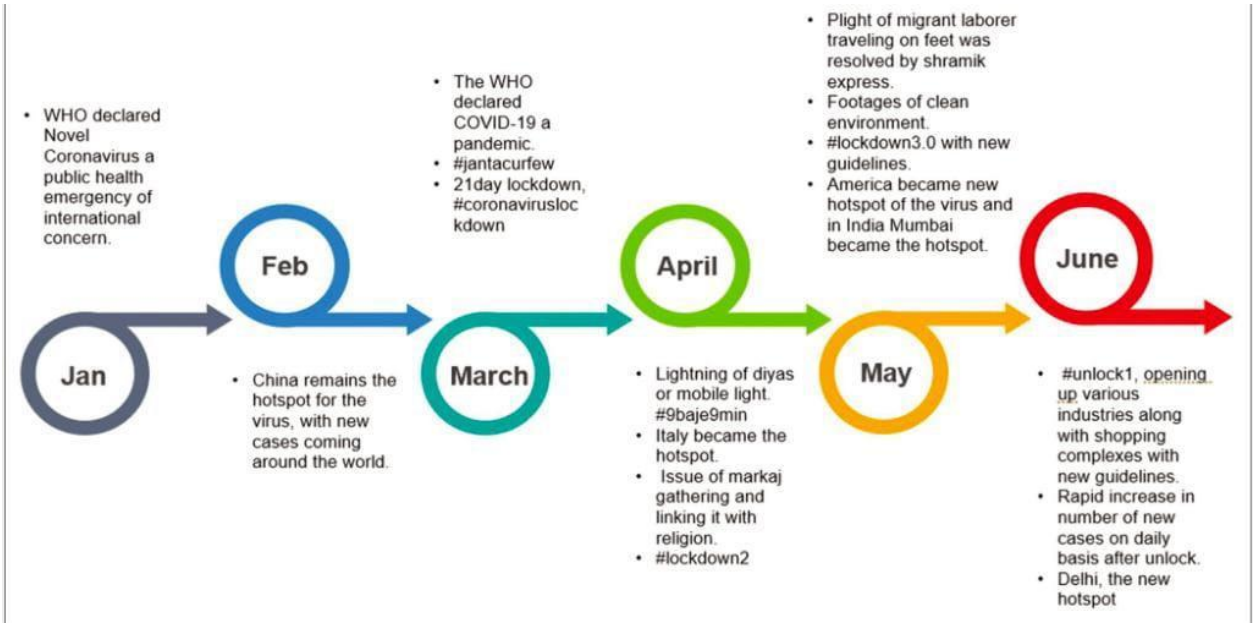

खोज तथा परिणाम

डेटा विश्लेषण की उपरोक्त चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि निस्संदेह कोविड -19 के समय में मीडिया ने शिक्षक, चिकित्सक, सहयोगी, मार्गदर्शक, रक्षक आदि भूमिकाओं का निर्वाह किया।भारत के मनोवैज्ञानिक सर्वेक्षण से यह पाया गया है कि कोविड-19 महामारी के समय लॉकडाउन लागू होने के कारण 18 से 50 आयु वर्ग के व्यक्ति मूल रूप से मानसिक रूप से प्रभावित हैं। वे बहुत अकेलापन महसूस करते थे और लंबे समय तक अपने दोस्तों और परिवारों से भी नहीं मिल पाते थे, उस समय सोशल मीडिया ने उन्हें अपने दोस्तों और परिवारों के साथ बातचीत जारी रखने में बहुत मदद की। हालांकि, इसने उन्हें एक निश्चित अवधि के लिए मानसिक आनंद दिया और तनाव कम किया। लॉकडाउन के समय को खुशी और उल्लास के साथ का आनंद लेने के लिए लोगों ने इतने सारे ट्रेंड को फॉलो किया था। इसके अलावा, उस मास मीडिया या डिजिटल मीडिया ने कोविड -19 और कोरोनावायरस से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी, जिससे लोगों को महामारी के प्रकोप और इससे सुरक्षित रहने के बारे में जागरूक किया गया। वितरण की समस्या के माध्यम से वायरस के संबंध में सभी प्रकार की विस्तृत जानकारी देने में प्रिंट मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 131 करोड़ आबादी वाले देश में सरकार के लिए लोगों को लॉकडाउन की आवश्यकता के बारे में जागरूक करना लगभग असंभव है, और इस समय, जनसंचार माध्यमों की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी थी।

निष्कर्ष

शोधकर्ता ने इस शोध पत्र को विभिन्न सरकारी स्रोतों से डेटा एकत्र करके माध्यमिक पद्धति में किया है जिससे अंततः यह निष्कर्ष निकला है कि लॉकडाउन की स्थिति को नियंत्रित करने, कानून और विनियमों को बनाए रखने में निस्संदेह मीडिया की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया में वायरस और सरकारी घोषणाओं के बारे में सभी प्रकार की जानकारी और समाचार प्रसारित किए गए और मनोरंजन, यात्रा और खाना पकाने के कई अन्य कार्यक्रमों को लोगों को खुश करने और अवकाश के समय आराम करने के लिए मीडिया के माध्यम से प्रसारित किया गया था। इसके अलावा सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, यूट्यूब और व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम भी सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला ऐप था, खासकर 18 से 50 आयु वर्ग के बीच। अंत में, कोविड-19 आपदा के दौरान मीडिया ने विस्तृत समाचार देकर, जन जागरूकता फैलाकर, प्रशासन को जवाबदेह एवं पारदर्शी बनाने में अपनी समन्वयकारी और चेतावनी तंत्र की महती भूमिका का निर्वाह किया।

संदर्भ

1. Chhotray, V., & Few, R. (2012). Post-disaster recovery and ongoing vulnerability: Ten years after the super-cyclone of 1999 in Orissa, India. Global environmental change, 22(3), 695-702.
2. मोहंती, यू.सी., मंडल, एम., और रमन, एस. (2004)। पीएसयू/एनसीएआर मेसोस्केल मॉडल का उपयोग कर उड़ीसा सुपर साइक्लोन (1999) का अनुकरण। प्राकृतिक खतरे, 31(2), 373-390।
3. गुप्ता, एच.के., हरिनारायण, टी., कौशल्या, एम. मिश्रा, डी.सी., मोहन, आई., राव, एन.पी., और सरकार, डी. (2001)। 26 जनवरी, 2001 का भुज भूकंप। जर्नल ऑफ जियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (वॉल्यूम 1 से वॉल्यूम 78 तक ऑनलाइन संग्रह), 57 (3), 275-278।
4. Lindell, M. K., Arlikatti, S., & Huang, S. K. (2019). Immediate behavioral response to the June 17, 2013 flash floods in Uttarakhand,

North India. International journal of disaster risk reduction, 34, 129-146.
5. Ahmad, A. R., & Murad, H. R. (2020). The impact of social media on panic during the COVID-19 pandemic in Iraqi Kurdistan: online questionnaire study. Journal of medical Internet research, 22(5), e19556.
6. Bridgman, A., Merkley, E., Loewen, P. J., Owen, T., Ruths, D., Teichmann, L., & Zhilin, O. (2020). The causes and consequences of COVID-19 misperceptions: Understanding the role of news and social media. Harvard Kennedy School Misinformation Review, 1(3).
7. Bridgman, A., Merkley, E., Loewen, P. J., Owen, T., Ruths, D., Teichmann, L., & Zhilin, O. (2020). The causes and consequences of COVID-19 misperceptions: Understanding the role of news and social media. Harvard Kennedy School Misinformation Review, 1(3).
8. Chisty, M. A., Afrose, N., & Mohima, M. (2021). Social media in disaster response: COVID-19 and India perspectives. Journal of emergency management (Weston, Mass.), 19(7), 165-176.
9. सरकार, एस., और सरमा, ए. (2006)। आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005: प्रतीक्षा में एक आपदा?. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 3760-3763।
10. Jha, P. K. (2018). Challenges of Disaster Management Act 2005 with special references of flood control—need for an alternative disaster management policy. Dialogue, 19(3), 60-69.
11. Negi, S., & Negi, G. (2020). Framework to manage humanitarian logistics in disaster relief supply chain management in India. International Journal of Emergency Services.
12. Nomani, M. Z. M., & Parveen, R. (2021). COVID-19 pandemic and disaster preparedness in the context of public health laws and policies. Bangladesh Journal of Medical Science, 41-48.
13. Takalani, M., Ravhuhali, F., & Mapotso, K. (2020). Disaster Management Act No. 57 Of 2002 And Its Framework Of 2005 In Response To Coronavirus: South African Universities'vulnerability. Gender & Behaviour, 18(1).
14. Garg, C. V., & Sam, A. (2020). Engagement of national cadet corps (NCC) cadets in disaster risk mitigation under pandemic COVID-19: A case study of Tamilnadu, Puducherry and Andaman & Nicobar Islands. IMPACT: International Journal of Research in Applied, Natural and Social Sciences (IMPACT: IJRANSS), 8, 15-24.
15. Cellini, N., Canale, N., Mioni, G., & Costa, S. (2020). Changes in sleep pattern, sense of time and digital media use during COVID-19 lockdown in Italy. Journal of sleep research, 29(4), e13074.
16. Roy, D., Tripathy, S., Kar, S. K., Sharma, N., Verma, S. K., & Kaushal, V. (2020). Study of knowledge, attitude, anxiety & perceived mental healthcare need in Indian population during COVID-19 pandemic. Asian journal of psychiatry, 51, 102083.
17. Goel, A., & Gupta, L. (2020). Social media in the times of COVID-19. Journal of Clinical Rheumatology.
18. जेना, पी.के. (2020)। भारत में शिक्षा पर महामारी COVID-19 का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च (आईजेसीआर), 12.
19. बनर्जी, डी., और मीना, के.एस. (2021)। सार्वजनिक स्वास्थ्य में "इन्फोडेमिक" के रूप में COVID-19: सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका। सार्वजनिक स्वास्थ्य में फ्रंटियर्स, 9, 231।